वर्तमान ि-क्षा है भ्रश्टाचार के लिए जिम्मेदार

-आचार्य महाप्रज्ञ

भारतीय संस्औति में अहिंसा का महत्व पर व्याख्यान

लाडनूं 11 अगस्त 09।

राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक मोहन भागवत ने कहा कि अहिंसा एवं सत्य ही हमारी संस्औति है। हम समय के साथ परिवर्तन कर रहे हैं, लेकिन हमारी अहिंसक ैली तथा सत्यवादिता की परंपरा आज भी प्रासंगिक है।

मंगलवार को लाडनूं पहुंचे भागवत सुबह नौ बजे जैन वि-व भारती स्थित सुधर्मा सभा में आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के साथ प्रवचन सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सत्य को ाब्दों से परिभाशित नहीं किया जा सकता। सत्य तो सत्य है। सत्य का कभी अभाव नहीं होता और असत्य का कभी प्रभाव नहीं होता। उन्होंने कहा कि सत्य को जानें, तभी संसार की वास्तविकता का ज्ञान हो सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि सत्य व अहिंसा पर भारतीयों ने अत्यधिक चिंतन-मनन किया है। इसी कारण उनके व्यवहार में इसका प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने बदलते परिवे-ा पर अंगुलि निर्दे-ा करते हुए वर्तमान ि-क्षा पद्धति को बढ़ते भ्रश्टाचार के लिए जिम्मेदार बताया।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि वर्तमान ि-क्षा जगत भ्रश्टाचार की जड़ है। हमारी ि-क्षा पद्धति में ि-क्षा के दौरान कहीं भी अहिंसा, सत्य एवं नैतिकता का कोई ज्ञान समाहित नहीं किया गया है। इसी वजह से पढ़ा लिखा व्यक्ति भी आचार-व्यवहार में नगण्य रह जाता है। ि-क्षक, परिजन व सरकार केवल पैसा कमाने वाली ि-क्षा को महत्व देते है, ऐसे में भ्रश्टाचार का बढ़ना जायज है। उन्होंने कहा कि हम समाज के समक्ष नैतिकता के साथ सत्य व अहिंसा को ि-क्षा के रूप में प्रस्तुत करें। इससे देश व वि-व का कल्याण संभव है। युवाचार्य महाश्रमण ने जीवन में अच्छाइयों को अपनाने का आह्वान करते हुए कहा कि भारतीय संस्औति हो या पा-चात्य संस्औति दोनों में जो बातें अच्छी हो, उन्हें अपनाना चाहिए और दोनों की बुराइयों को त्यागना चाहिए। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

ये भी पहुचे लाडनूं

राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक मोहन भागवत के साथ संघ के क्षेत्रीय प्रचारक प्रमुख नंदलाल जो-ी, क्षेत्रीय प्रचारक प्रमुख संजय कुमार, जोधपुर प्रचारक विजय कुमार, जोधपुर प्रांत प्रचारक विजय कुमार, विद्याभारती राजस्थान क्षेत्र के संगठन मंत्री शिवप्रसाद, विद्याभारती के जोधपुर प्रांत के सहसंगठन मंत्री दुर्गसिंह राजपुराहित व विभाग प्रचारक निंबाराम भी लाडनूं पहुचे।

जैन वि-व भारती का किया भ्रमण

सुधर्मा सभा में प्रवचन के बाद मोहन भागवत ने जैन वि-व भारती का भ्रमण कर यहां से संचालित विभिन्न उपक्रमों की जानकारी ली। इस दौरान उन्होने वर्धमान ग्रंथागाार, आरोग्य, आचार्य तुलसी स्मारक, सचिवालय,

तुलसी अध्यात्म नीडम आदि के बारे में जानकारी ली। इसके अलावा उन्होंने तुलसी कला प्रेक्षा में सजी साधु-साध्वियों द्वारा हस्तनिर्मित कलाऔतियों को भी देखा। उन्होने आर्ट गैलेरी को सत्यम ि-वम सुंदरम् की प्रेरणा जगाने वाला केन्द्र बताते हुग ज्ञान, भक्ति एवं कर्म की त्रिवेणी बताया।

उदाहरण देने वाला समाज चाहिए

राश्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के तत्वावधान में डीडवाना जिला एकत्रीकरण कार्यक्रम हुआ

राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जिला डीडवाना एकत्रीकरण कार्यक्रम मंगलवार को जैन वि-व भारती स्थित सुधर्मा सभा में हुआ। समारोह में स्वयसेवको को संबोधित करते हुए सर संघचालक मोहनराव भागवत ने कहा आजादी के 60 वर्श पूरे होने के बाद ही अपूर्णता की टीस हमारे मन है। आपसी भेदभाव, भ्रश्टाचार, आतंकवाद जैसी समस्याओं ने आज भी हमारे दे-ा में हमें गुलाम से मुक्त नहीं हो पाए हैं, इसका कारण भी स्वयं हम ही है।

वि-व गुरू कहलाने वाला भारत सबसे पिछड़ता जा रहा है। हम परिवर्तन करना चाहते है विकसित बनना चाहते हैं, लेकिन जो वास्तविक रूप से परिवर्तन होना चाहिए वो नहीं हुआ है। इन समस्याओं से निपटने क लिए सबको संगठित होकर एक ऐसे समाज की स्थापना करनी होगी, जा उपदे-ा कम और उदाहरण ज्यादा दे। भागवत ने वर्तमान समस्याओं को उठाते हुए कहा कि गरीबी बढ़ रही है, मंहगाई बढ़ रही है, बेरोजगारी बढ़ रही है। इन सब पर लोग घरों में बैठकर चिंता करते हैं, लेकिन बाहर कोई नहीं निकलता। घर से बाहर निकलेंगे ता पता चलेगा कि आप जैसे चिंता करने वाले कितने हैं।

उन्होने कहा कि सबसे पहले हमें अपने निजी स्वार्थों का त्याग करना होगा। रोजाना एक घटे का समय दे-ाहित के निकालने का अभ्यास करें। देने का भाव जागृत करें। तन-मन व जीवन दे-ा के प्रति समर्पित कर दें। इस तरह का आचरण कर हम दे-ा में व्याप्त भययुक्त वातावरण को समाप्त कर एक नए समाज की स्थापना कर सकते है। इसलिए आव-यक है कि सभी अपने आप में परिवर्तन लाएं, इससे दुनिया स्वतः ही परिवर्तित हो जाएगी। सभी भारतवासियों को अपना मानना और दे-ा के कण-कण से प्यार करना सीखो। कार्यक्रम का :ाुभारंभ संघ घोश के साथ ध्वजारोहण से हुआ। कार्यक्रम में स्वयंसेवकों ने एक साथ मिलकर त्रिलोकी रो नाथ अठै खुद बण्यो गवाळो रे गीत प्रस्तुत किया। :यामसुंदर रांधड़ ने अतिथियों का परिचय करवाया। इस अवसर पर सैकड़ों स्वयं सेवक उपस्थित थे।

संघ के मायने में अहिंसा

मोहनराव भागवत ने अहिंसा के मायने बताते हुए कहा कि हम :ाारीरिक प्रि-ाक्षण प्रदान करते हैं लेकिन इसका तात्पर्य हिंसा से नहीं है। हम अपनी संस्औति के अनुरूप अहिंसा पर उतना ही बल देते हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया इतनी सरल नहीं है। हम लड़ना नहीं चाहते लेकिन दे-ा की सुरक्षा-सम्मान के लिए हमें लड़ना ही होगा। दे-ा को दुश्टों के कपट जाल से बचाने के लिए लड़ना हिंसा का एक अलग रूप है। धर्म के लिए युद्ध हर युग में हुआ है। और यह कदापि अनुचित नहीं है।

स्वार्थ का त्याग करने वाला ही राश्ट्र की सेवा कर सकता है

-युवाचार्य महाश्रमण

राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला एकत्रीकरण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जहां परिवार की बात आती है वहीं निजी स्वार्थ गौण हो जाता है। जहां समाज की बात आती है। वहां परिवार गौण हो जाता है। जहां नगर की बात आती है। वहां समाज गौण हो जाता है। इसी तरह राश्ट्रहित की बात पर प्रदे-ा तक गौण हो जाता है उन्होंने कहा कि व्यक्ति में त्याग व बलिदान की भावना होनी चाहिए। जो व्यक्ति स्वार्थ का त्याग कर सकता है, वह राश्ट्र की सेवा कर सकता है। प्रेषक :

(ललित गर्ग)
सचिव-सुखी परिवार फाउंडेशन
ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट
25 आई॰ पी॰ एक्सटेंशन, पटपडग़ंज , दिल्ली-92

फोनः 22727486, 9811051133